Badal Saraswat
@badal_saraswat • Jan 23, 2021 • 28 tweets

Share Twitter Download

#इतिहास_ही_हमारी_धरोहर_है

#जातिवाद सभ्य समाज के माथे पर एक #कलंक है।
☝️ जिसके कारण मानव,मानव के प्रति न केवल #असंवेदनशील बन गया है, ☝️ अपितु शत्रु समान #व्यवहार करने लग गया है...
☝️ समस्त मानव जाति #ईश्वर_की_संतान है।
☝️ यह तथ्य जानने के बाद भी #छुआछूत के नाम पर

पूरा पढ़िये👇👇👇

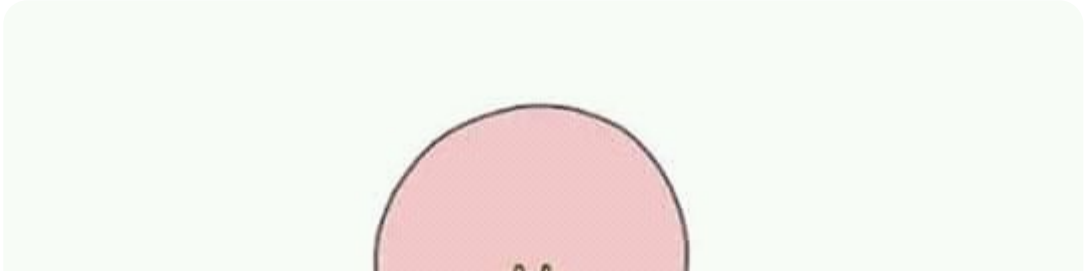

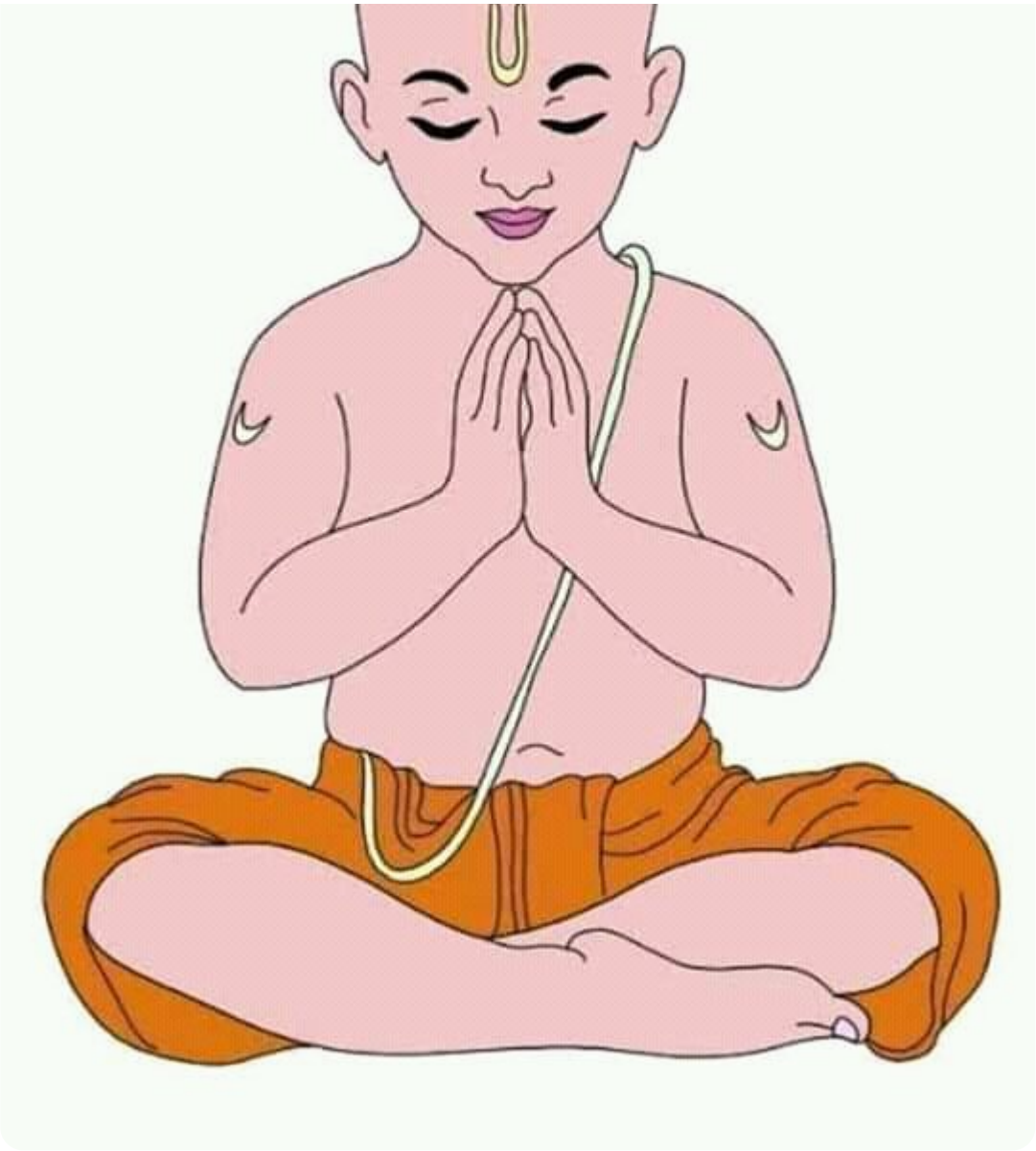

ऊँच-नीच के नाम पर,आपस में #भेदभाव करना #अज्ञानता_का_बोधक है।
☝ #वैदिककाल में #जातिवाद और प्राचीन भारत में #छुआछूत के अस्तित्व से तो विदेशी लेखक भी स्पष्ट रूप से इंकार करते है।
👉[It is admitted on all hands by all western scholars also that in the most ancient. Vedic religion,

there was no caste system. —
(Prof. Max Muller writes in '#ChipsfromA_GermanWorkshop' Vol.11,P. 837)]👈

☝ #वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था #प्रधान थी,जिसके अनुसार #जैसा_जिसका_गुण_वैसे_उसके_कर्म, #जैसे_जिसके_कर्म_वैसा_उसका_वर्ण।
☝ जातिवाद रुपी #विषवृक्ष के कारण हमारे #समाज को कितने

#अभिशाप झेलने पड़े।
☝ जातिवाद के कारण आपसी #मतभेदों में वृद्धि हुई,
☝ सामाजिक एकता और संगठन का नाश हुआ

☝ जिसके कारण विदेशी हमलावरों का आसानी से निशाना बन गये।
☝ एक संकीर्ण दायरे में वर-वधु न मिलने से बेमेल विवाह आरम्भ हुए जिसका परिणाम दुर्बल एवं गुण रहित संतान के रूप में निकला...

आपसी मेल न होने के कारण #विद्या,#गुण,#संस्कार, #व्यवसाय आदि में उन्नति रुक गई।

#शंका
👉1. जाति और वर्ण में क्या अंतर है?
#समाधान:- जाति का अर्थ है उद्भव के आधार पर किया गया वर्गीकरण।
न्याय सूत्र में लिखा है समानप्रसवात्मिका जाति:-न्याय दर्शन[2/2/71]अर्थात जिनके प्रसव अर्थात जन्म

का मूल सामान हो अथवा जिनकी उत्पत्ति का प्रकार एक जैसा हो वह एक #जाति कहलाते है।
👉#आकृतिर्जातिलिङ्गाख्या- न्याय दर्शन[2/2/65] अर्थात जिन व्यक्तियों कि आकृति (इन्द्रियादि) एक समान है,उन सबकी एक जाति है।👈

☝ हर जाति विशेष के प्राणियों के शारीरिक अंगों में एक समानता पाई जाती है।

☝ सृष्टि का नियम है कि कोई भी एक जाति कभी भी दूसरी जाति में परिवर्तित नहीं हो सकती है और न ही भिन्न-भिन्न जातियाँ आपस में संतान को उत्त्पन्न कर सकती है।
इसलिए सभी जातियाँ ईश्वर निर्मित है नाकि मानव निर्मित है। सभी मानवों कि उत्पत्ति, शारीरिक रचना, संतान उत्पत्ति आदि एक समान होने

के कारण उनकी एक ही जाति हैं और वह है #मनुष्य।

☝ #वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए प्रयुक्त किया गया "#वर्ण" शब्द का प्रयोग किया जाता है।
☝ वर्ण का मतलब है जिसका #वरण किया जाए अर्थात जिसे #चुना जाए।
☝ वर्ण को चुनने का आधार #गुण,#कर्म और #स्वभाव होता है।
वर्णाश्रम

व्यवस्था पूर्ण रूप से #वैदिक है एवं इसका मुख्य प्रयोजन समाज में #मनुष्य को परस्पर #सहयोगी बनाकर भिन्न-भिन्न कामों को परस्पर बाँटना,

☝ किसी भी कार्य को उसके अनुरूप दक्ष व्यक्ति से करवाना, सभी मनुष्यों को उनकी #योग्यता अनुरूप काम पर लगाना एवं उनकी #आजीविका का प्रबंध करना है।

☝ "आरम्भ में सकल मनुष्य मात्र का एक ही वर्ण था" ☝

👉[#प्रमाण-
☝ 1)बृहदारण्यक उपनिषद् प्रथम अध्याय चतुर्थ ब्राह्मण 11,12,13 कण्डिका,

☝ 2)महाभारत शांति पर्व मोक्ष धर्म अध्याय 42 श्लोक10,

☝ 3)भागवत स्कंध 9 अध्याय 14 श्लोक 4,

☝ 4)भविष्य पुराण ब्रह्मपर्व अध्याय 40]

☝ लौकिक व्यवहारों कि सिद्धि के लिए कामों को परस्पर बांट लिया।
☝ यह विभाग करने कि प्रक्रिया पूर्ण रूप से योग्यता पर आधारित थी।
☝ कालांतर में वर्ण के स्थान पर जाति शब्द रूढ़ हो गया।
☝ मनुष्यों ने अपने वर्ण अर्थात योग्यता के स्थान पर अपनी अपनी भिन्न-भिन्न जातियाँ निर्धारित कर ली।

☝ #गुण,#कर्म और #स्वभाव के स्थान पर जन्म के आधार पर अलग-अलग $जातियों में मनुष्य न केवल #विभाजित हो गया
☝ अपितु एक दूसरे से #भेदभाव भी करने लगा।
☝ वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के स्थान #छदम एवं #मिथक जातिवाद ने लिया।

#IAS_संजय_दीक्षित ने बयान में कहा कि “कौन कहता है मंदिरों में जाति

पूछी जाती है।
☝ जाति मंदिरों में कभी नहीं पूछी जाती…
☝ #संविधान में पूछी जाती है,

☝ #सरकारी_नौकरी में पूछी जाती है,#राशन,#स्कालरशिप और हर #संस्थानो में पूछी जाती है।"

☝ फिर वो कौन हैं जो मंदिरो पर आरोप लगा देते हैं ☝
☝ हालांकि इससे पहले भी #IAS_दीक्षित ने टिप्पणी में कहा था कि

👉"ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण और शूद्र का बेटा शूद्र ही रहेगा, यह बात #मनुस्मृति नहीं है, बल्कि #भारतीय_संविधान का #जाति_प्रमाण_पत्र कहता है।"👈
☝ आगे उन्होंने #सनातन_धर्म की तारीफ की और कहा था कि "बाकी #सनातनधर्म में तो #व्यास,#वाल्मीकि,#रविदास को भी #ब्राह्मण तथा #संत की श्रेणी

में रखा गया था।
#कर्म_से_महान....

☝ कौन ❓ हैं #IAS_संजय_दीक्षित:-
👉#राजस्थान कैडर के #सन1986 बैच के #IASअधिकारी हैं संजय दीक्षित जोकि #सोशल_मीडिया पर एक #लेखक की पहचान भी रखते हैं।
☝ वो द प्रिंट व स्वराज्यमग के लिए कॉलमिस्ट भी हैं। ☝ जबकि राजस्थान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष पद पर

भी रह चुके हैं।
☝ साथ ही राजस्थान सरकार के #प्रधान_सचिव_के_पद पर भी काम कर चुके हैं।

☝ वैसे तो ब्राह्मणों ने जातियाँ बनाई नहीं है।

ये खुद समय-2 #देशद्रोही_गद्दारों😠 ने अपने #निजीस्वार्थ😠के लिए बना दी गईं साथ-साथ #नेहरू_के_कुकर्म😠 #गाँधी_के_कुकर्म😠 #काँग्रेस_के_कुकर्म😠 ने

भरपूर कोशिश की #हिन्दुओं को #जातिवाद में तोड़ने के लिए भरपूर प्रयास किये,जिसमें ये भरपूर सफल भी रहे

☝ लेकिन चलो मान लिया कि उन्होंने ही बनाई है तो
☝ पहले के जमाने मे कमाने खाने के लिए #सरकारी_नौकरी तो होती नही थी।

👉ब्राह्मणों ने पूरा #फर्नीचर_व्यवसाय बढ़ई को दिया।

👉रियल सेक्टर कुम्हार को दिया।
👉लेदर का व्यवसाय चर्मकार को दिया।

👉डिलीवरी का व्यवसाय भी चर्मकार को दिया।
👉दूध का व्यवसाय यादव को दिया।
👉टेक्सटाइल का दर्जी को दिया।
👉हथियार का व्यवसाय लुहार को दिया।
👉बर्तन का ठठेरे को दिया।
👉पत्तल का बारी को दिया।
👉सूप का धरिकार को दिया।

👉चूड़ी व्यवसाय मलिहार को दिया।
👉मीट का खटीक को दिया।
👉फूल का माली को दिया।
👉तेल का व्यवसाय तेली को दिया।

☝ जिससे सबको #रोजगार मिला ☝
☝ लेकिन आज इन सभी सारे सम्मानित व्यवसाइयों को आज संविधान ने "पिछड़ा अछूत"बना दिया है और
☝ सबसे #महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी व्यवसायों पर आज

#मुस्लिमों का कब्जा है।😠😠😠

☝ #क्षत्रियों को वो काम दिया जिससे जवानी में औरतें विधवा और बच्चे अनाथ हो जाते थे।😢😢😢
☝ जो कोई भी नही करना चाहेगा अपने लिए #भिक्षा माँगना और अध्यापन भी जारी रखा
☝ आखिर सब #व्यवसाय जिससे भारत पूरी दुनिया मे #सोने_की_चिड़िया था।

☝ ब्राह्मणों ने #क्षत्रियों के हिस्से में #बलिदान दिया और
☝ स्वयं ब्राह्मणों के हिस्से में #भिक्षाटन आया तो फिर
उन्होंने #जाति_व्यवस्था में #अन्याय कैसे किया?

☝ इस अन्याय शब्द को अपनी #मानसिकता से बाहर निकाल दो,
☝ जो #राजनीति_की_रोटी सेंकते हैं,उनकी रोजीरोटी अपने आप बंद हो जाएगी

एक इंसान को हम बार-भूल जाते हैं या फिर कहें तो उसके बारे में बताने से हम डरते है कि कहीं हमारा #समाज फिर से टूट ना जाये, उसके बारे में बताना भी बहुत जरूरी है...

#सन1808 मे #ईस्ट_इंडिया_कंपनी ने"17 जातियों"के टैक्स न दे पाने के कारण तीर्थयात्रा मंदिरों में घुसने पर रोक लगायी थी।

👉(मंदिरों में जाने को रोक किसी #धर्मशास्त्र ने नही बल्कि #व्यवसायिक कारणों से #ईस्ट_इन्डिया_कम्पनी ने लगायी थी। #ईस्ट_इंडिया_कंपनी ने इन्हें "कंगाल जातियों"का नाम दिया था।)👈

खैर ये 17 कंगाल जातियां है।

1. लोली या कुसबी
2. कुल्लाल या सूनरी
3. मचूवा
4. नमोशूद्र
5. घूसकी
6. गजुर

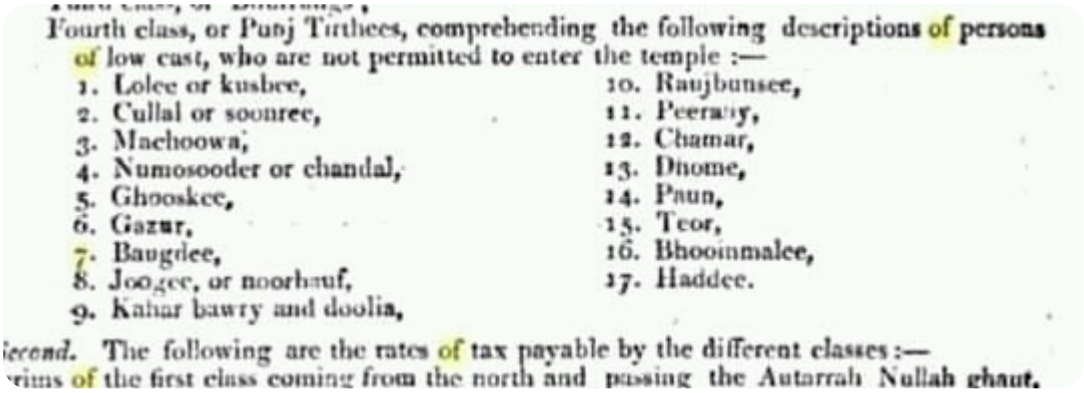
Fourth class, or Punj Tirthees, comprehending the following descriptions of persons of low cast, who are not permitted to enter the temple :—

1. Lolee or kusbee,
2. Cullal or soonree,
3. Machoowa,
4. Numosooder or chandal,
5. Ghooskee,
6. Gazur,
7. Baugdee,
8. Joogee, or noorhauf,
9. Kahar bawry and doolia,
10. Raujbunsee,
11. Peeraty,
12. Chamar,
13. Dhome,
14. Paun,
15. Teor,
16. Bhooinmalee,
17. Haddee.

Second. The following are the rates of tax payable by the different classes :—
rims of the first class coming from the north and passing the Autarrah Nullah ghaut.

7. बौगरी
8. जूगी या नूरबौफ
9. कहार, बावरी और डोलिया
10. राजबुनसी
11. पीरातिय
12. चमार
13. डोम
14. पौन

15. तेओर
16. भुइनमाली
17. हद्दी

☝ लगभग 104 साल बाद #सन1912 मे इसे #डिप्रेस्ड_क्लास नाम देकर कुछ #सुविधायें दी गयी थी।

👉(ध्यान दें कि इस #डिप्रेस्ड_क्लास के लिये #छुआछूत जैसा

कोई कारण नही है)👈
☝ इस चक्कर में #सन1929 मे #अम्बेडकर ने "#साइमन_कमीशन" के ज़रिये अपनी #जाति_महार को इसमें #शामिल करवाया था।

☝ फिर तो इसमे शामिल होने की होड़ लग गयी।
☝ #सन1947 तक #429डिप्रेस्डजातियां थी।

☝ #आजादी के बाद इसका नाम #श्ड्यूलड_कास्ट(SC) किया गया और #1235जातियां
👇

इसमे जोडी गयी ।

Ref: Parliamentary Papers: Papers etc.
(East India Company):
Second part. Session 24 Nov 1812. July 1813, Volume 2.)

👇👇👇
twitter.com/badal_saraswat…

Badal Saraswat @badal_saraswat
Jan 23 21 View on Twitter

ध्यान से देखिए इन्हें, ये वे गरीब #ब्राह्मण हैं,जिन पर #अम्बेडकरवादी,#वामपंथी😠 लोग #दलितों_के_शोषण का #आरोप लगाकर #समाज_में_जातीय_विद्वेष का #जहर घोलते हैं।😠😠😠
☝ जबकि सत्य यह है कि #ब्रिटिश_शासन के दौरान #ईसाईयों व उनके #चमचों ने #सन1769 से #सन1900 के बीच

पूरा पढ़िये👇👇👇

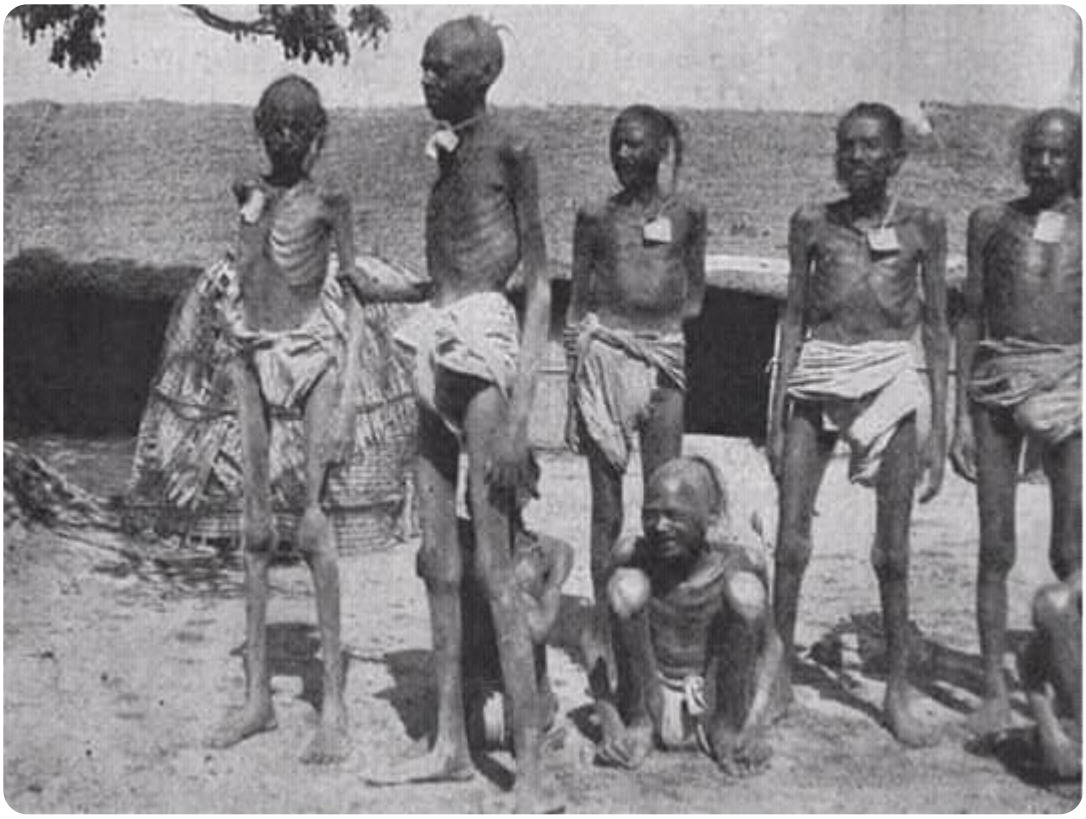

Show this thread

भईया जी और भी भाई-बहनों को प्रेरित कीजिये...
ज्यादा से ज्यादा सभी मित्रगण, परिजनों से शुरुआत कीजिये एवं जागरूक कीजिये...
🙏🙏🙏

Badal Saraswat

@badal_saraswat

झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं बाज़ की उडान में आवाज़ नहीं होती तजुर्बों ने सिखाया है शेरो को शिकार करना यूं बेवजह दहाड़ मारकर शिकार किया नहीं जाता..

Follow on Twitter